जर्मनी में नाजियों के प्लेन हैंगर में बना है ट्रॉपिकल आइलैंड थीम पार्क

जर्मनी में बर्लिन से 50 किमी दूर यह थीम पार्क एयरशिप हैंगर के अंदर बना है। 1945 में सोवियत सेना ने नाज़ी सेना के इस हैंगर पर कब्जा कर लिया। वर्ष 2002 में मलेशियाई कंपनी तानजोंग ने इसे खरीदा और ट्रॉपिकल आइलैंड थीम पार्क (वॉटर पार्क) बनाया। 360 मीटर लंबाई, 210 मीटर चौड़ाई व 107 मीटर ऊंचाई के साथ यह दुनिया का एकमात्र हॉल है, जिसके अंदर कोई पिलर नहीं है। एक बार में 6,000 लोगों की क्षमता वाले इस थीम पार्क में 500 कर्मचारी काम करते हैं। एक साल में यहां औसतन 13 लाख लोग पहुंचते हैं। यह पार्क एक बड़े से डोम के नीचे नायाब तरीके से तैयार किया गया है। ट्रापिकल आइलैंडस नाम का यह हालीडे रिजार्ट जर्मनी की राजधानी बर्लिन से दक्षिण में करीब एक घंटे की दूरी पर स्थित है। यहां की खूबसूरती लोगों को अपनी ओर आकर्षित करती है। फिल्हाल, यह वाटर पार्क आम लोगों के लिए फिर से खोल दिया गया है।

इस पारदर्शी बबल टैंट में रहकर निहार सकते हैं तारे

यदि आप लाखों टिमटिमाते तारों के बीच रात गुज़ारने का लुत्फ उठाना चाहते हैं, तो कैलिफोर्निया के जोशुआ ट्री नेशनल पार्क के पास स्थि ये बबल टैंट एक बेहतर जगह हो सकती है। प्रोपर्टी इनवेस्टमेंट और मैनेजमेंट कंपनी मरबेला लेन ने इस बबल टैंट को एक निजी ज़मीन पर लगाया है। एक बेडरूम वाले इस पारदर्शी टैंट में एक रात ठहरने का किराया 596 डालर यानि करीब 43,300 रूपये हैं।

दुनिया के वो पांच रहस्य, जो आज तक हैं अनसुलझे, वैज्ञानिक भी हैं हैरान

इस धरती पर कई ऐसी जगहें हैं, जो आज के इंसानों के लिए एक रहस्य बनी हुई हैं। उनके बारे में पता लगाने की तमाम कोशिशे हुईं, लेकिन वो ऐसे रहस्य हैं, जिन्हें सुलझाने की जितनी भी कोशिश की गई, वैज्ञानिक या पुरातत्व विभाग के लोग उतना ही उसमें उलझते चले गए। आज हम आपको ऐसे ही दुनिया के उन पांच रहस्यों के बारे में बताने जा रहे हैं, जो आज तक अनसुलझे ही हैं। इनमें से कुछ तो हजारों साल पुराने हैं।

अजरक ओएसिस व्हील

ये रहस्यमय आकृतियां सीरिया से लेकर जॉर्डन और सऊदी अरब तक फैली हुई हैं। वैज्ञानिकों के मुताबिक, इन आकृतियों को 8500 साल पहले बनाया गया होगा। हालांकि यह सिर्फ एक अनुमान है। इन्हें सबसे पहले साल 1927 में देखा गया था, जब ब्रिटेन के रॉयल एयरफोर्स का विमान इस इलाके से गुजर रहा था। अब इन बड़ी-बड़ी आकृतियों को क्यों बनाया गया था, यह अब तक एक रहस्य ही बना हुआ है।

गोसेक सर्किल

जर्मनी के एक छोटे से शहर गोसेक में यह अजीबोगरीब गोलाकार आकृति है। इसे सबसे पुराना ज्ञात सौर वेधशाला माना जाता है। यह आकृति करीब 250 फीट में फैली हुई है। इसे जर्मन स्टोनहेंज के नाम से भी जाना जाता है। कार्बन डेटिंग से पता चला है कि इसे करीब 4900 साल पहले बनाया गया होगा, लेकिन इसे किसने बनाया था, यह अब तक एक रहस्य ही है। पिछले कई सालों से इसको लेकर शोध चल रहे हैं।

सी ऑफ गैलिली के अंदर विशाल चट्टान

इजरायल के सी ऑफ गैलिली के अंदर हजारों छोटे-छोटे पत्थरों से बनी एक विशाल आकृति है। चट्टाननुमा यह आकृति 32 फीट ऊंची और 230 फीट व्यास की है, जिसका वजन लगभग 60 हजार टन बताया जाता है। हैरानी की बात तो ये है कि इनका निर्माण प्राकृतिक रूप से नहीं हुआ था बल्कि इन्हें बनाया गया है। माना जाता है कि यह आकृति 4000 साल पुरानी हो सकती है, लेकिन यह सिद्ध करने के लिए कोई पुख्ता सबूत नहीं हैं। पानी के अंदर इन आकृतियों को क्यों बनाया गया था, इसका जवाब किसी के पास नहीं है।

नैन मडोल

ऑस्ट्रेलिया के टेमवेन द्वीप के पास हजारों साल पुरानी एक खंडहर बस्ती है, जो चारों तरफ से पानी से घिरी हुई है। इस जगह को नैन मडोल के नाम से जाना जाता है। यहां बड़े-बड़े पत्थरों को ऐसे सजाया गया है, जैसे यहां कोई रहता हो। इन पत्थरों को यहां कौन लाया और कितने साल से ये यहां पर हैं, कोई नहीं जानता। रहस्यमय होने की वजह कई लोग इस जगह को भगवान का बनाया हुआ शहर भी कहते हैं।

मेक्सिको का टियाटिहुआकन शहर

मेक्सिको में एक रहस्यमय शहर है, जिसे टियाटिहुआकन के नाम से जाना जाता है। इसकी खोज 14वीं सदी में एजटेक्स के द्वारा की गई थी। इसे प्लेस ऑफ गॉड यानी भगवान की जगह कहा जाता है। इस जगह के बारे में कहीं भी कोई लिखित प्रमाण नहीं है कि इसे किसने बनाया, कब बनाया, क्यों बनाया और यहां कौन लोग रहते थे। यह अब तक एक रहस्य ही बना हुआ है।

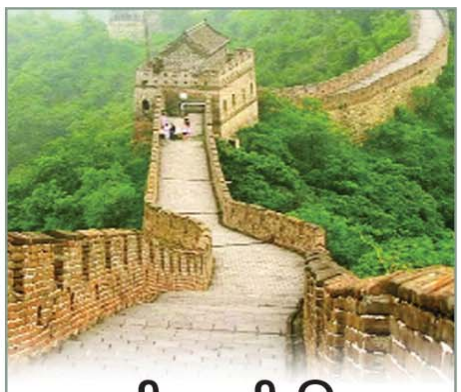

चीन की विशाल दीवार से जुड़े रोचक तथ्य, शायद ही जानते होंगे आप!

चीन की विशाल दीवार को कौन नहीं जानता है। यह सिर्फ चीन ही नहीं बल्कि दुनिया की भी सबसे लंबी दीवार है। यह दुनिया के सात अजूबों में शामिल है, जिसे अंग्रेजी में ग्रेट वॉल ऑफ चाइना कहते हैं। इस दीवार को बनाने के लिए ईंट, पत्थर, लकड़ी और धातुओं का इस्तेमाल किया गया है। इसी वजह से इसे दुनिया की सबसे पुरानी मिट्टी और पत्थर की बनी दीवार भी कहा जाता है।

इस दीवार की लंबाई को लेकर थोड़ी असमंजस की स्थिति है, क्योंकि साल 2009 में किए गए एक सर्वेक्षण में इसकी लंबाई 8,850 किलोमीटर बताई गई थी जबकि साल 2012 में चीन में ही किए गए एक राजकीय सर्वेक्षण के मुताबिक, चीन की दीवार की कुल लंबाई 21,196 किलोमीटर है। यह शोध चीन के एक प्रमुख समाचार पत्र शिन्हुआ में भी प्रकाशित हुआ था। इस दीवार का निर्माण किसी एक राजा ने नहीं बल्कि चीन के कई राजाओं ने अलग-अलग समय में करवाया है। इसे बनाने की शुरुआत ईसा पूर्व पांचवीं शताब्दी से हुई थी, जो 16वीं शताब्दी तक चली। इस दीवार की एक और खास बात है कि इसे बनवाने की कल्पना चीन के पहले सम्राट किन शी हुआंग ने की थी, लेकिन उसके सैकड़ों साल बाद इसका निर्माण कार्य आरंभ हुआ था। चीन के लोग इस दीवार को वान ली चैंग चेंग के नाम से जानते हैं। कहते हैं कि यह दीवार अंतरिक्ष से भी दिखती है। इस दीवार की अगर चौड़ाई की बात करें तो यह इतनी है कि इस पर एक साथ पांच घोड़े या 10 पैदल सैनिक एक साथ चल सकते हैं। कहते हैं कि इस दीवार को बनाने में करीब 20 लाख मजदूर लगे थे, जिसमें से 10 लाख लोगों ने अपनी जान गंवा दी थी। माना जाता है कि उन्हें दीवार के नीचे ही दफना दिया गया था। यही वजह है कि इस दीवार को दुनिया का सबसे बड़ा कब्रिस्तान भी कहा जाता है। वैसे तो चीन की दीवार को देश की सुरक्षा के लिए बनाया गया था, लेकिन यह हो नहीं सका था। मंगोल शासक चंगेज खान ने वर्ष 1211 में इसे तोड़ दिया था और उसे पार कर चीन पर हमला कर दिया था। लंबी होने की वजह से इस दीवार की ऊंचाई हर जगह एक समान नहीं है। यह किसी जगह पर नौ फीट ऊंची है तो कहीं पर 35 फीट ऊंची है।

टाइटैनिक जहाज और उससे जुड़े कुछ तथ्य

हमारा इतिहास काफी लंबा रहा है जिसके पन्नों पर न सिर्फ अच्छे बल्कि बुरे अध्यायों को भी रेखांकित गया है। कुछ अध्याय इतने दुखद हैं कि हम चाह कर भी इसकी लिखावट को बदल नहीं सकते। किसे पता था 10 अप्रैल 1912 में इंग्लैंड के पोत से रवाना हुए टाइटैनिक का पहला समुद्री सफर आखिरी सफर होगा....किसे पता था दुनिया का सबसे बड़ा टाइटैनिक जहाज पानी में डूब जाएगा। यह इतिहास का वो दिन था जब लाखों लोगों की जिंदगी का सफर एक साथ खत्म हो जाएगा। हम आज भी जब हम इस मंजर को सोचते हैं, तो रूह कांप जाती है। हालांकि, इस घटना पर कई फिल्में बनीं, कई उपन्यास भी लिखे गए लेकिन फिल्म टाइटैनिक को काफी लोकप्रियता हासिल हुई और इस फिल्म को ऑस्कर अवार्ड से भी सम्मानित किया गया था।

मगर जब भी हम इस घटना के बारे में सुनते हैं या समझने की कोशिश करते हैं, तो कई सवाल हमारे मन में आते हैं। यकीनन आपके मन में भी आते होंगे कि आखिर टाइटैनिक जहाज डूबा कैसे और इसे अब तक बाहर क्यों नहीं निकाला गया। अगर आपका मन भी इन्हीं सवालों से परेशान हो जाता है, तो अब आप परेशान न हों क्योंकि आज हम टाइटैनिक जहाज से जुड़े रोचक तथ्यों के बारे में बात करेंगे।

टाइटैनिक जहाज का रहस्य

कितना अजीब है न टाइटैनिक जहाज जिसे दुनिया का सबसे बड़ा जहाज कहा जाता है और अपने पहले ही सफर पर यह डूब जाता है। हालांकि, इसको लेकर यह भी मिथ था कि यह दुनिया का सबसे सुरक्षित और कभी न डूबने वाला जहाज बताया गया था। यह जहाज चार दिन की यात्रा के बाद 14 अप्रैल 1912 को एक हिमशिला से टकरा कर डूब जाता है। इसमें 1,517 लोगों की मृत्यु हुई जो इतिहास की सबसे बड़ी शांतिकाल समुद्री आपदाओं में से एक है।

टाइटैनिक जहाज कौन-से समुद्र में डूबा था?

जब यह हादसा हुआ था तब टाइटैनिक जहाज 41 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से इंग्लैंड के साउथम्पटन से अमेरिका के न्यूयॉर्क की ओर बढ़ रहा था। मगर अचानक तीन घंटे के अंदर 14 और 15 अप्रैल 1912 को अटलांटिक महासागर में यह जहाज डूब गया था। इस हादसे के बाद कनाडा से 650 किलोमीटर की दूरी पर 3,843 मीटर की गहराई में जहाज दो भागों में टूट गया था और दोनों हिस्से एक दूसरे से 800 मीटर दूर हो गए थे।

टाइटैनिक जहाज में कौन बचा था?

- टाइटैनिक हादसे में करीब 1500 लोगों की मौत हुई थी। इसके बाद समुद्री जहाजों की सुरक्षा व्यवस्था को बेहतर करने की कोशिश की जाने लगी ताकि ऐसा हादसा दोबारा न हो। समुद्री जहाजों की सुरक्षा के लिए रडार जैसे उपकरणों का इस्तेमाल शुरू किया जाने लगा। रिपोर्ट्स के मुताबिक 706 लोग बच गए थे।
- टाइटैनिक जहाज को नॉर्थ आईलैंड के बेलफास्ट में 31 मार्च 1909 को 3000 लोगों की टीम ने मिलकर बनाया था।
- 31 मई 1911 को टाइटैनिक जहाज बनकर तैयार हो गया था, जिसे बनने में लगभग 26 महीने लगे थे।
- इसे बनाते वक्त लगभग 246 लोगों को चोट आई थी और दो लोगों की मृत्यु हो गई थी।